जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे।
सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले।।५७ ।।

जिसने यहां पर लापरवाही की और अपने धनी की पहचान नहीं की तो वह यहां दीन का या दुनियां का कोई भी सुख नहीं ले सकती, अर्थात् धनी की वाणी लेकर धनी पर फिदा होना तथा सुन्दरसाथ की सेवा का सुख नहीं पाएगी।

लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए।
ए हांसी अर्स के मोमिन, जिन कराओ कोए।।५८ ।।

संसार में तो लाभ मिलना नहीं और दूसरा घर में जाकर हंसी भी होगी, इसलिए हे मोमिनो! घर में जाकर हंसी मत कराना। यहां सावधान हो जाओ।

जिन उपजे मोमिन को, इन हांसी का भी दुख।
सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख।।५९ ।।

मोमिनों को इस हांसी (हंसी) का भी दुःख न हो, क्योंकि यह बहुत बुरा दुःख है जो सुख में दुःख की याद अखण्ड कर देगा।

ना तो जिन जुबां में दुख कहूं, सो ए करूं सत टूक।
तो एता रूहों खातिर, बिध बिध करतहों कूक।।६० ।।

नहीं तो जिस जबान से मैं रूहों के दुःख की बात करती हूं, उस जबान के टुकड़े-टुकड़े कर दूं। यह तो मैंने रूह की भलाई के वास्ते तरह-तरह की आवाज में (बोली में) कहा है।

जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम अर्स अजीम के, अपने रूह नहीं दोए।।६१ ।।

यदि मेरी रूहों को दुःख होता तो मुझे सुख कैसे हो सकता है? हम तुम दोनों ही अर्श (परमधाम) के हैं। जहां वाहेदत है (एक-दिली है), अपनी रूह जुदा-जुदा नहीं है।

पेहेले फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन।
कलमा जाहेर करके, देखाया आकीन।।६२ ।।

पहले फरेब (झूठा खेल) का खेल दिखाया। पीछे घर की पहचान करवाई। फिर कलमा (तारतम) जाहिर करके हमें हमारे यकीन की पहचान कराई।

माएने जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए।
और गुझ भी करों जाहेर, अर्स वतनी जो कोए।।६३ ।।

कुरान के रहस्यों को (गुझ बातों को) थोड़ा-सा हमने अभी बताया है। और भी छिपे भेद अर्श के मोमिनों के वास्ते जाहिर करती हूं।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ६८२ ।।

सनन्ध–दिल मोमिन अर्स सुभान की

दिल हकीकी रूहें अर्स की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान।
तो कही गिरो ए रबानी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।१ ।।

रूहों के दिल में श्री राजजी महाराज आशिक होकर स्वयं बैठे हैं, इसलिए खुदा की इस जमात के दिलों को खुदा का घर कहा है।

Nijanand App

जेता कोई दिल मजाजी, चढ़ सके न नूर मकान।
दिल हकीकी पोहोंचे नूर तजल्ला, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। २ ।।

जितने झूठे दिल वाले हैं वह अक्षर तक नहीं जा सके। जिनके दिलों में खुदा खुद बैठा है वह नूर तजल्ला (परमधाम) तक पहुंचे और इन्हीं के दिल को अर्श बनाया है।

रूहें उतरी लैलत कदर में, सो उमत रबानी जान।
इनको हिदायत हक की, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३ ।।

मोमिन लैलतुलकदर में खेल देखने आए। यह खुदा की जमात है तथा इनको प्राणनाथजी की हिदायत है। ऐसी उम्मत के दिल को अर्श कहा है।

होवे फारग दुनी के सोर से, ए दिल हकीकी निसान।
करें हजूर बातून बंदगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४ ।।

जिनके दिल हकीकी हैं वह दुनियां की हाय-तोबा से छुटकारा पा जाते हैं और साक्षात् मूल मिलावे में हजूरी बन्दगी करते हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

हकें कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस हैं फुरकान।
जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने जिन रूहों के लिए अपने आने का वायदा किया, वही वाणी के वारिस हैं, अर्थात् वाणी को वही समझेंगे। इन्हीं के लिए माशूक श्री राजजी महाराज आए हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

याही वास्ते इमाम रूह अल्ला, आए उतर चौथे आसमान।
कौल किया लाहूत में इनों से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ६ ।।

इन्हीं के लिए ही चौथे आसमान (लाहूत), जहां इनसे आने का वायदा किया था, से इमाम (श्री प्राणनाथ जी) रूह अल्लाह (श्यामाजी) पधारे हैं। इन्हीं के दिल को ही अर्श कहा है।

ए गिरो कई बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान।
एही उमत खास महंमदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ७ ।।

इसी गिरो (गिरोह, जमात, समुदाय) को कई बार तूफान (हूद-तूफान में गोवर्धन के तले बचाया और नूह-तूफान में बृज से रास पहुंचाया) से बचाया, यही श्यामा महारानी की जमात है। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है। बाकी सब काफिरों को डुबो दिया, अर्थात् महाप्रलय हो गई।

एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान।
खोले हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ८ ।।

यह तिहत्तरवां नाजी फिरका है जिसे तारतम वाणी से कुरान की इशारतें रमूजें (रहस्य भरे) खोलने का ज्ञान है। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

हरफ मुकता इनों वास्ते, रखे बातून मांहें फुरमान।
सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ९ ।।

कुरान के अन्दर इन्हीं के वास्ते हरफ मुक्ता छिपाकर रखे हैं (अलिफ, लाम, मीम, इत्यादि), जिनको जाहिर यही करेंगे। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

Nijanand App

हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान।
सो कही सिफत सब महंमद की, ए जाने दिल अर्स सुभान।। १० ।।

कुरान और हदीसों के बीच सारी सिफत (विशेषता) इन्हीं की लिखी है इन्हीं के दिल को अर्श कहा है। वह सारी सिफत मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) की है।

एही भांत महंमद उमत की, कही सिफत रसूल समान।
धरे बोहोत नाम उमत के, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।। ११ ।।

मुहम्मद की उम्मत (जमात) को खुदा के समान कहा है और जिनके कुरान और हदीसों में तरह-तरह के नाम दिए हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

जबराईल असराफील, हक नजीकी निदान।
सो भी आए उमत वास्ते, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १२ ।।

जबराईल (जिब्रील अलैहस्सलाम) और असराफील जो धनी के नजदीकी हैं, वह भी इन्हीं के वास्ते आए हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान।
सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। १३ ।।

यह चौदह तबकों (लोकों) का खेल मुहम्मद (श्यामा महारानी) के वास्ते बनाया है। वह मुहम्मद अपनी रूहों के वास्ते खेल में आई हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

निसान लिखे कयामत के, फुरमान हदीसों दरम्यान।
सो भी खोले एही उमत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १४ ।।

कुरान और हदीसों में कयामत के निशान लिखे हैं। उन निशानों को भी यही जमात खोलेगी, इसलिए इनके दिल को खुदा अर्श कर बैठे हैं।

उठाई गिरो एक अदल से, कयामत बखत रेहेमान।
देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। १५ ।।

कयामत के समय कजा से पहले ही इस जमात को निकाल लेंगे तथा यही जमात इस कुरान की गवाही देगी, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

कहूं बेवरा मोमिन दुनी का, जो फुरमाया फुरमान।
सक सुभे इनमें नहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १६ ।।

कुरान में जैसी हकीकत दुनियां और मोमिन की लिखी है, उसको मैं कहती हूं। मोमिनों को जरा भी शक नहीं होगा क्योंकि इनके दिल में खुदा विराजमान हैं।

दिल मजाजी दुनी सरियत, सो सके न पुल हद भान।
याको तोड़ उलंघे ले हकीकत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १७ ।।

जिनके दिल पर शैतान अबलीस (नारद) बैठा है वह झूठे हैं और वह निराकार के पार नहीं जा सकेंगे। निराकार के पार हकीकत की वाणी लेकर मोमिन ही जाएंगे क्योंकि इन्हीं का दिल अर्श कहा गया है।

Nijanand App

दिल मुरदा मजाजी जुलमत से, पैदा कुंन केहेते कुफरान।
क्यों होए सरभर मोमिनों, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। १८ ।।

जो जीव कुंन से पैदा हुए हैं उनके दिल मजाजी हैं यह उन मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकते जिनके दिल में हक की बैठक है।

ए जो कही गिरो मलकूती, पैदा जुलमत से दुनी फान।
रूहें फिरस्ते उतरे अर्स से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। १९ ।।

जीव सृष्टि की जमात निराकार से पैदा हुई है। रूहें, फरिश्ते (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी) अपने-अपने अर्श से उतरी हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, किया रसूलें मुख बयान।
सो क्यों उलंघे जुलमत को, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।। २० ।।

रसूल साहब ने जीव सृष्टि के दिल को झूठे गोश्त का टुकड़ा कहा है। वह निराकार को कैसे लांघ सकती हैं, क्योंकि उनका दिल अर्श नहीं है।

जो उतरे होवें अर्स से, रूहें तौहीद के दरम्यान।
सो लेसी अर्स अजीम को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २१ ।।

जो अर्श से रूहें उतरी हैं, वह रूहें तौहीद (एक खुदा ही के सामने झुकने वाली) की ही, अर्श अजीम (परमधाम) का सुख लेंगी। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

जो मुरदार करी दुनी मोमिनों, सो दिल मजाजी खान पान।
नूर बिलंद पोहोंचे पाक होए के, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। २२ ।।

मोमिनों ने जिस दुनियां को नाचीज (मरा हुआ) समझकर छोड़ दिया है उसको दुनियां वालों ने अपने व्यवहार में लिया है। मोमिन ही पाक होकर नूर बिलंद (परमधाम) पहुंचेंगे। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

कह्या पर जले जबराईल, चढ़ सकया न चौथे आसमान।
रूहें बसें तिन लाहूत में, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २३ ।।

चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) में जहां रूहें रहती हैं और जहां जबराईल नहीं जा सकता और कहता है कि मेरे पर (पंख) जलते हैं, इसलिए इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंच में, ना जबराईल तिन समान।
ए माएने मेयराज रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २४ ।।

हुक्म रूपी दरख्त के ऊपर श्यामा महारानी की सूरत रूपी मुर्ग चोंच में खाक (मिट्टी का तन) लेकर बैठे हैं। जबराईल उनके झूठे तनों के समान भी नहीं है। यह भेद रूहें बताएंगी। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

पोहोंचे महंमद मेयराजमें, दो गोसे फरक कमान।
इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २५ ।।

मुहम्मद साहब दर्शन करने खुदा के सामने पहुंचे। इनके बीच में एक कमान के दोनों किनारों जितना फासला रहा। यह वह पवित्र स्थान है जहां रूहें रहती हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

नोट : कमान के दो किनारे—एक तन श्यामाजी का और दूसरा तन श्री प्राणनाथजी का।

Nijanand App

नब्बे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रेहेमान।
सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २६ ।।

रसूल साहब को नब्बे हजार हरफ खुदा ने कहे। उसमें से कुछ गुझ (गुह्य) रखवाए। उनके भेद भी यह मोमिन जिनके दिल को अर्श कहा है, बताएंगे।

किए आपसमें रूहें गवाही, हकें अपनी जुबान।
याको जाने दिल हकीकी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २७ ।।

इश्क रब्द में श्री राजजी महाराज ने अपनी जबान से कहा था कि रूहो! तुम आपस में गवाह रहना। इसको हकीकी दिल वाले ही जानते हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

दिया जवाब रूहों हक को, ए सुकन दिल बीच आन।
ए रूहें रहें हक हजूर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २८ ।।

रूहों ने हक को खिलवत में जवाब दिया था। यह बातें भी उन्हीं को याद हैं जो हक के सामने रहती हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

कह्या मोतिन के मोंहों कुलफ, ए माएने तोड़त पढ़ों गुमान।
ए अर्स तन रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। २९ ।।

मेयराजनामा में मोतियों (रूहों) के मुंह पर कुफ्ल (ताला) लगा कहा है। यहां के काजी लोग अहंकार में उलटे अर्थ करते हैं। इसके अर्थ को रूहें ही जानती हैं, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

पोहोंच्या मेयराज में गुनाह मोमिनों, ए सुन उरझे मुसलमान।
ठौर गुन्हे न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३० ।।

मेयराजनामा में लिखा है मोमिनों को गुनाह लगा। यह वचन सुनकर दुनियां के मुसलमान उलझन में पड़े हैं। जहां जबराईल नहीं पहुंच सका उस घर में गुनाह कैसा? इस भेद को मोमिन ही जानते हैं। इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

नोट : गुनाह जो लिखा है इश्क हमारा बड़ा है कहने का और खेल मांगने का गुनाह है।

हकें हाथ हिसाब लिया मोमिनों, तोड़या गुमान दे नुकसान।
तित बैठे अपना अर्स कर, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों का हिसाब अपने हाथ में लिया तथा अर्श का गुमान, कि इश्क हमारा बड़ा है, को तोड़कर खेल में भेज दिया (अर्श छीनकर माया दी, यह नुकसान दिया)। खेल में भी आकर मोमिन के दिल को अपना अर्श कर बैठे, इसलिए इन्हीं के दिल को अर्श कहा है।

पोहोंची तकसीर रूहें अर्स में, हके फुरमाया फुरमान।
तित दूजा कोई न पोहोंचिया, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३२ ।।

हक ने कुरान में फरमाया है कि रूहों को उस अर्श में जहां आज दिन तक मोमिनों के सिवाय कोई पहुंचा नहीं, गुनाह लगा, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

आसिक नाचे अर्स अजीम में, दूजा नाच न सके इन तान।
और राहै में जलें आवते, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३३ ।।

ऐसे आशिक मोमिन अर्श में नाचते हैं तथा उनके सिवाय और कोई नाच नहीं सकता। बिना मोमिन के बाकी सब रास्ते में ही जल जाएंगे, इसलिए इनके दिल को अर्श कहा है।

Nijanand App

जो गिरो भाई कहे महंमद के, ताको इस्कै में गुजरान।
वाको एही फैल एही बंदगी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३४ ।।

जिस जमात को मुहम्मद ने अपना भाई कहा है, वह खुदा के इश्क में ही मग्न रहते हैं। उनकी यही रहनी, यही बन्दगी है, जिनके दिल को अर्श कहा है।

एही खासलखास गिरो महंमदी, जाकी बंदगी इस्क ईमान।
इनों फैल ऊपर का ना रहे, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३५ ।।

यही मुहम्मद (श्री श्यामाजी) की खासल खास जमात है जिनकी बन्दगी इश्क और ईमान है। वह ऊपर का दिखावा नहीं करते। उन्हीं मोमिनों का दिल सुभान का अर्श है।

दूजा जले इन राह में, ए वाहेदत का मैदान।
तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३६ ।।

दूसरा इस रास्ते में ही जल जाएगा। यही खुदा की रूहों की एकदिली का घर है। जहां पर बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की तीनों सूरत और रूहें एक दिल होकर रहती हैं। यही सुभान का अर्श है।

महंमद क्यों ल्याए खासी उमत, इन बीच जिमी हैवान।
ए उमत जाने इन स्वाल को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३७ ।।

मुहम्मद (श्यामा महारानी) ऐसी जमात को इस पशुओं (जो धर्मविहीन लोग हैं) की धरती पर क्यों लाए? इस सवाल का जवाब भी मोमिन जानते हैं, जिनके दिल को अर्श किया है।

गलित गात अंग भीगल, ए दिल हकीकी गलतान।
ए वाहेदत हक हादी रूहें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३८ ।।

यह हकीकी दिल वाले मोमिन जो खुदा के प्रेम में सराबोर होकर मग्न रहते हैं, वही श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें एक तन हैं। इनके दिलों को अर्श कहा है।

बका तरफ कोई न जानत, पढ़े ढूंढ़ ढूंढ़ हुए हैरान।
सो बका हदें सब बेवरा किया, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ३९ ।।

परमधाम कहां है कोई नहीं जानता था। पढ़े लिखे ढूंढ़-ढूंढ़कर हैरान हो गए। उस परमधाम के कुल पच्चीस पक्षों का वर्णन (ब्योरा) वही बता सकते हैं जिन मोमिनों का दिल अर्श है।

अर्स बका के बयान की, हुती न काहूं सुध सान।
सो जरे जरा जाहेर करी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४० ।।

अखण्ड परमधाम के वर्णन की किसी को सुध नहीं थी। वहां की गली-गली का वर्णन मोमिनों ने अब कर दिया। उनका दिल अर्श कहा है।

लिखी हकें इसारतें रमूजें, सो किन खोली न फिरस्ते इंसान।
सो दुनी सब बेसक हुई, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४१ ।।

हक ने जो इसारतें (इशारे) और रमूजें (रहस्य) कुरान में लिखी हैं उनको कोई भी इन्सान या देवी-देवता खोल नहीं सका। अब उनके मोमिनों की कृपा से दुनियां को सब जानकारी मिली। उनका दिल अर्श कहा है।

Nijanand App

रूह अल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान।
ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४२ ।।

श्यामा महारानी की चाबी (तारतम ज्ञान) से मुहम्मद की तीन सूरतों—बसरी, मलकी और हकी ने अखण्ड द्वार खोले हैं। मोमिनों का दिल अर्श है।

तो हुई दुनी सब हैयाती, जो उड़ाए दिया उनमान।
पट खोले महंमद भिस्त के, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४३ ।।

जब दुनियां के अटकली ज्ञान को मिटाकर आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथजी) ने बहिश्त के दरवाजे खोल दिए तब सब दुनियां अखण्ड हुई। मामिनों के दिल में खुदा (पारब्रह्म) विराजमान हैं।

सब जिमी पर सिजदा, किया फिरस्ते घस पेसान।
पर होए न हकीकीं दिल बिना, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४४ ।।

अजाजील (भगवान विष्णु) ने सारी दुनियां पर माथा रगड़-रगड़कर सिजदा बजाया, परन्तु हकीकी दिल वाले मोमिनों के समान अजाजील नहीं हो सका, क्योंकि मोमिनों का दिल अर्श है।

कलमा निमाज रोजा दिल से, दे जगात आप कुरबान।
करे हज बका हमेसगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४५ ।।

कलमा (तारतम), नमाज (आरती), रोजा (समर्पण), जकात (सेवा में धन खर्चना) तथा अखण्ड परमधाम का चितवन करना—यह सब सच्चे दिल से करने वाले ही अर्श दिल मोमिन हैं।

जिन चांद नूर देख्या महंमदी, सोई जाने रोजे रमजान।
न जाने दिल मुरदा मजाजी, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४६ ।।

जिन्होंने मुहम्मदी चांद के नूर (श्यामा महारानी-देवचन्द्रजी) से तारतम ज्ञान पा लिया, वही रोजा रमजान समझते हैं। झूठे दिल वाले इसे नहीं समझते। इसको मोमिन ही जानते हैं जिनका दिल अर्श है।

सुध ना रोजे रमजान की, ना चांद सूरज पेहेचान।
करें सरीकी गिरो रबानी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४७ ।।

दुनियां के लोगों को रमजान के रोजे (धनी पर समर्पण होना) की खबर नहीं है और न उन्हें चन्द्रमा के समान देवचन्द्रजी (श्यामा महारानीजी) तथा सूर्य के समान श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान है। वह उन मोमिनों, जिनके दिल को अर्श कहा है, की बराबरी करते हैं।

जब ले उठसी रूहें लुदंनी, तब होसी सब पेहेचान।
दई हैयाती सबन को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४८ ।।

जब तारतम वाणी से रूहें जागृत होकर उठ बैठेंगी तब सबको पहचान हो जाएगी। यह सारे संसार को अखण्ड करेगी। यही मोमिन हैं जिनके दिल को अर्श कहा है।

ईसे आब हैयाती पिलाइया, काढ़या कुफर जिमी आसमान।
दीन एक किया सब इसलाम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।। ४९ ।।

श्री देवचन्द्रजी (श्यामा महारानी) ने अखण्ड तारतम ज्ञान लाकर दुनियां (चौदह तबक) का कुफर (अन्धकार) मिटाया और सबको एक पारब्रह्म पर सिजदा कराया। यही मोमिन हैं जिनके दिल को अर्श कर सुभान बैठे हैं।

Nijanand App

सेहेरग से हक नजीक, कह्या खासलखास मकान।
इत हिसाब इत कयामत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।५०।।

इन्हीं मोमिनों की शहेरग (सांस वाली नाड़ी) से भी नजदीक पारब्रह्म है। यही खासल खास परमधाम के रहने वाले हैं। यही सबका हिसाब करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे, इसलिए इन मोमिनों के दिल को ही हक ने अर्श बनाया है।

कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान।
सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।५१।।

रसूल मुहम्मद कहते हैं कि खुदा परवरदिगार अपने मुखारबिन्द से इन मोमिनों की जमात की सिफत (प्रशंसा) करते हैं। इस बात को वही जानते हैं जिनके पास हक का इलम है और इन्हीं के दिल को अर्श कर खुदा बैठे हैं।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ७३३ ।।

सनंध–रसूल साहेब की पेहेचान बातूनी

केहेती हों मोमिन को, सुनसी सब जहान।
माएने गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान।।१।।

श्री महामतिजी कहती है कि मैं मोमिनों को कहती हूं पर सारा संसार सुनेगा। इस कुरान के जाहिरी या छिपे रहस्य को आज दिन तक कोई नहीं ले सका।

जाहेर माएने कलमें के, रसूलें कहे समझाए।
सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए।।२।।

रसूल साहब ने कलमे के जाहिरी अर्थ भी बताए। पर उसे भी कोई नहीं ले सका तो मैं उसके गूढ़ रहस्य कैसे बता दूं।

नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमिनो के कारन।
अंतर मैं ना कर सकों, अर्स रूहें मेरे तन।।३।।

मोमिनों के वास्ते फिर भी थोड़ी-सी पहचान कराती हूं। मैं मोमिन से अन्तर नहीं कर सकती, क्योंकि मोमिन मेरे परमधाम के तन हैं।

जाहेर कह्या सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम।
आगूं अर्स रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम।।४।।

पहले कुरान के अर्थ जाहिर कर दिए हैं। अब बातूनी (बातिन) अर्थ भी जाहिर कर देती हूं। आगे अर्श की रूहों का मेला होगा जिसमें अखण्ड घर की और खसम की पहचान करा दूंगी।

जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया एह।
ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे।।५।।

यह न समझना कि किसी कारण के बिना यह खेल बनाया है। यही कुरान का गूढ़ रहस्य है। दिल देकर समझ लेना।

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत।
हक भेजे अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत।।६।।

अक्षर पार अक्षरातीत अपने परमधाम से रसूल भेजेंगे। इस हकीकत को समझो उसके हाथ रूहों के लिए अपना फरमान भेजेंगे। यह दुनियां तो फानी है।

Nijanand App